प्रार्थना से ज्यादा महत्व ईश्वर के होने का -ब्र.कु.गंगाधर

आघातजनक फिर भी सत्य हकीगत यही है कि प्रार्थना को ज्यादा महत्व दिया गया है। जो कि कई जगह प्रार्थना एक शिष्टाचार मात्र बनकर रह गई है। कहां फिर प्रार्थना रोजिंदी क्रिया या रिति रिवाज की प्रवृत्ति बनकर रह गई है। और हां फिर प्रार्थना ईश्वर प्रत्येक की मांग से आजीवन स्वरूप धारण कर रह गई है। प्रार्थना का प्रभावकता स्वयं सिद्ध है, लेकिन उस प्रभावकता साधने की प्रक्रिया घोर अपेक्षा बन गई है।

व्यक्ति को परिणाम ज्यादा पसंद हैं, प्रक्रिया नहीं। हिमालय के सर्वोच्च ऊंचा शिखर एवरेस्ट विजय की बात सब करते हैं, लेकिन उस विजय प्राप्त करने के लिए किया गया पुरुषार्थ इतफाक ही कोई विचार करते हैं। हकीकत में परिणाम से ज्यादा प्रक्रिया का महत्व है। कोई सुंदर कवि-कृति पढ़ते हैं तो परिणाम हम पाते हैं, लेकिन उनका सच्चा आनंद तो तब आता जब हम जानते हैं कि कैसी प्रक्रिया में से रचयिता कवि गुजरा होगा और परिणाम स्वरूप ऐसी सुंदर काव्य रचना का सृजन हुआ!

महात्मा गांधी की सिद्धि की बात करते हैं, लेकिन उसके लिए किया गया प्रयत्न भूल जाते हैं। गांधी जी की अहिंसा की बात हम जोर-शोर से करते हैं, परंतु उस अहिंसा की सिद्धि के लिए गांधी जी ने सूनाये हुए गुणों की तालीम का विचार करते हैं कोई? यह तालीम हो तब ही अहिंसा का मार्ग सफल होता है। अहिंसा के लिए ऊंच कोटि की त्याग वृत्ति, न्यायी वर्तन, आत्म सम्मान का भान, देह-पीड़ा सहन करने की शक्ति जैसे आंतरिक गुणों की आवश्यकता पर गांधीजी ने भार पूर्वक कहा था। अहिंसा के मार्ग पर चलने पर जमीन रहे न रहे, धन छोड़ना पड़े, शरीर का भी त्याग करना पड़े, तो भी अहिंसा की उपासना उनकी परवा करे नहीं, ऐसा उन्होंने कहा था। उन्होंने कहा था कि अभय हुए बिना पूर्ण अहिंसा का पालन संभव ही नहीं। अहिंसा की तालीम के लिए मरने की ताकत होनी चाहिए।अब विचार करें कि व्यक्ति ने ऐसे गुणों की तालीम नहीं लिया हो और ऐसे गुणों को नजरअंदाज कर दिया हो, फिर वह मात्र अहिंसा की भावना को रटता रहे तो सफल कैसे होगा?

ऐसे ही ईश्वर के आशीर्वाद के लिए गुणों की तालीम की जरूरत पड़ती है। ऐसी तालीम के लिए सबसे अधिक निर्णायक बाबत है व्यक्ति का ईश्वर के सम्मुख रहकर जीवन जीने का कृत संकल्प अर्थात् की व्यक्ति की दृष्टि कोई संसारिक सिद्धि प्राप्त करने की ओर नहीं, परंतु ईश्वर के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए ही हो। सदा ईश्वर को सन्मुख रखेंगे इसका अर्थ यही होता की प्रत्येक कार्य करते वक्त वे विचार करेगा की इससे ईश्वर प्रसन्न होगा या नाराज? उनके जीवन के व्यवहार का माप-तोल का कांटा यही होगा कि जिससे ईश्वर रहे ऐसा ही करना है, नाराज हो ऐसा कभी नहीं करना।

वह दो रीत से ईश्वर के सन्मुख होगा। एक तो स्वयं प्रत्येक कार्य में ईश्वर को हाजूर-नाजूर रखेगा और दूसरा निरंतर वह ईश्वर के गुणों का चिंतन कर उन गुणों की प्राप्ति के लिए प्रयास करेगा। ऐसे गुणों को स्वयं के व्यक्तित्व में खिले - उसके लिए समान बन जीएगा। जीवन व्यवहार में उचित होते प्रलोभन और आकर्षण के बीच में रहकर वे उन दिव्य गुणों का हृदय में समाने और फिर ये गुणों को व्यवहार में प्रगटाने का प्रयास करेगा।

इसलिए जीवन में जो कुछ भी शुभ कार्य होता है उसमें 'मैं निमित्त हूँ, कार्य कराने वाला तो ईश्वर है' ऐसा मानने वालों को जीवन में सफलता अहंकारी बनाती नहीं और निष्फलता उनको घोर निराशा में डूबा नहीं सकती। व्यक्ति ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करेगा, तब ही आपने आप वे दूसरों को मदद रूप होने का पुरुषार्थ करेगा। स्वहित से ऊपर निकल परहित का विचार करेगा। स्वयं के स्वार्थ का काम करने के बदले परमार्थ का काम करते उनको प्रसन्नता होगी। उनका मन अंदर ही अंदर खुश रहेगा, समय बितते ऐसा व्यक्ति को परायों की प्रसननता में स्वयं का सुख लगेगा। दूसरों के सुख की झलक देख खुद के अंतर में अपूर्व उल्लास अनुभव करता है। इस तरह ईश्वर सन्मुख मानव स्वयं के आत्मा पहचान के साथ-साथ दु:खी और पीड़ित जीवों पर करूणा बरसाता रहेगा। परायों की चिंता करना परिजनों की चिंता तो करता ही है। वह समझता है कि उनकी पहली सेवा घर और परिवार से ही होती है। इसलिए ही वह मात-पिता की सेवा के साथ गरीब-दुखियों की सेवा करने का अनुसंधान साधना रहता है। ईश्वर के आशीर्वाद की इच्छा अपने अंतर में ईश्वर को पाने की ख्वाईस जगाती है। यही ख्वाईस के कारण ही अपना आत्म विकास होता है। समय बितते बहार मूर्ति रूप से बिराजीत ईश्वर साधक के हृदय में बसता है। मीरा ने हृदय में श्रीकृष्ण का अनुभव किया, संत तुलसीदास ने हृदय में राम को बसाया। महावीर ने कहा कि आत्मा के साथ ही परमात्मा छुपा हुआ है। जैसे छोटा गुठली में आम का पेड़ छुपा हुआ है ऐसे ही ईश्वर को भी प्रार्थना से ज्यादा ईश्वर के आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रबल इच्छा साधक के लिए ज्यादा उपकारक है।

दैवीगुण सर्व का प्यारा बनाता है

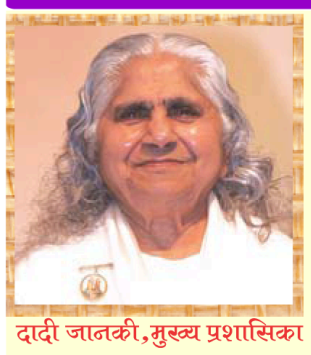
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

बाबा की हर मुरली से मजा तभी आता है जब मनन-चिंतन करते हैं। मनन-चिंतन तभी करते हैं जब उसे अमल में लाने का पक्का ख्याल मन में आता है। अमल में लाने से खुद में शक्ति भी आती है और सिखाने वाले के लिए अंदर से प्यार भी पैदा होता है, अपना भविष्य अच्छा उज्ज्वल दिखाई पड़ता है। क्योंकि संगमयुग की घड़ियां बड़ी जल्दी-जल्दी पास हो रही है। और यह भी महसूस होता है कि ऐसी अमूल्य घड़ी फिर वापस आने वाली नहीं है। इसलिए इस समय का कदर करना पड़ता है। हर पल बाबा की याद और ज्ञान हमारे जीवन को अमूल्य बना रहा है। कौड़ी मिसल जीवन जो थी अभी हीरे जैसी लगती है।

काम, क्रोध ने बिल्कुल कंगाल बना दिया है। जब कोई कंगाल बन जाता है तो उस पर बड़ा तरस पड़ता है। गरीब को कंगाल नहीं कहेंगे उसके पास सिर्फ धन कम है इसलिए गरीब है। शरीर से कोई बीमार है तो उसको भी कंगाल नहीं कहेंगे। सम्बन्ध में माता-पिता नहीं है अनाथ या विधवा है तो उसे भी कंगाल नहीं कहेंगे। यूं तों कई बातें आती हैं परन्तु जब कंगाल कहा जाता है तो न सिर्फ निर्धन हैं परन्तु उसके पास कुछ भी नहीं है, उसकी तो सूरत भी देखकर तरस आयेगा। भगवान ऐसी गति किसी की न हो। क्योंकि अपने गुणों-अवगुणों से, अपने लक्षणों से अपनी स्थिति ऐसी बना दी। जैसे आज बाबा ने कहा जहां क्रोध है वहां पानी के भरे हुए मटके भी सूख जाते हैं। क्रोधी खुद भी तपता है, औरों को भी तपाता है। उसका चित्त कभी शांत नहीं हो सकता है, वह दूसरे की शांति को भंग करता है, विघ्न डालता है, खिटपिट करता है, ऐसे कर्म बड़े खराब हैं। गरीब होगा तो स्वभाव का मीठा होगा। गरीब किसी को तंग वा दु:खी नहीं करता है। वह साहूकारों से अच्छा है। धनवान तो किसी न किसी को दु:खी करते रहते, गरीब किसी को दु:खी नहीं करते हैं। धनवान वेस्ट गंवायेंगे, गरीब अपने पेट से भी दूसरे को खिलायेंगे। ऐसे गरीब भगवान के प्यारे बनते हैं। धनवान यदि अपने परिवार वालों को भी कुछ देगा तो भी गिनती करता रहेगा। उसके ऊपर किसी को तरस नहीं आयेगा।

जिसमें दैवीगुण हैं वह सबका प्यारा बन जाता है। कुछ भी न हो पर ईश्वर का प्यारा गुणवान तो बनें। यह तो जानते हैं हर एक इंसान का दिल मोम के बराबर है। देखने में भल बड़ा मजबूत हो लेकिन है मोम के बराबर। हमारा आसुरी स्वभाव किसी को दु:ख देता है, पर जब खुद को दु:ख मिलता है तो अंदर क्या हाल होता है, यह भी देखें। अपनी फीलिंग कैसी होती है? दु:ख सहा नहीं जाता है। तो हम अपनी नेचर ज्ञान-योग से मजबूत बनायें, मोम जैसी न हो। ऐसी कोई बात हमारे से न हो जो हमको अपने कर्म कूटना पड़े। कोई कहते इस जन्म में तो हमने कुछ नहीं किया। ज्ञान के पहले किया था बाद में तो किया नहीं। इस जन्म के हैं या ज्ञान के बाद के किये हुए कर्म हैं, कुछ भी हैं, ज्ञान-योग दो ऐसी चीजें बाबा देता है जिससे रियलाइजेशन की शक्ति हम सबको खबरदार कर देती है। अबकी खबरदारी, सच्चाई-सफाई, रहमदिली हमारे अंदर परिवर्तन कर देती है। हमारे अंदर कोई हिंसक विचार भी न आये। किसी से बदला लेने का ख्याल भी न आये। मुझे ज्ञान-योग की बड़ी अच्छी मदद है, योग बाबा से है, कोई देहधारी से नहीं है, अगर देहधारी की याद आई तो जब तक उनसे मिलन नहीं हुआ तब तक शांति नहीं होगी। यह काम की तृष्णा भी महान शत्रु है जो योगी बनने नहीं देती। कोई कहते हम सम्बन्ध में नहीं आये हैं, परन्तु यह मिलन की, देखने की तृष्णा है तो यह भी बड़ा विघ्न रूप बन जाती है योगी बनने नहीं देती है। इसलिए सदा यही याद रहे कि हम इस देह में मेहमान हैं, घर जाना है, पावन बनना है, यह बाबा की अमानत है इसको कोई टच नहीं कर सकता, खराब दृष्टि से देख भी नहीं सकता है। मैं बाबा की नजरों में रहूं, मेरी नजरों में बाबा हो, ऐसे निहाल होकर रहने की जो बाबा से गिफ्ट मिलती है, वह सदा मेरे पास हो, तो कभी बेहाल होने की घड़ी नहीं आयेगी।

कर्म अच्छा है तो भविष्य अच्छा होना ही है

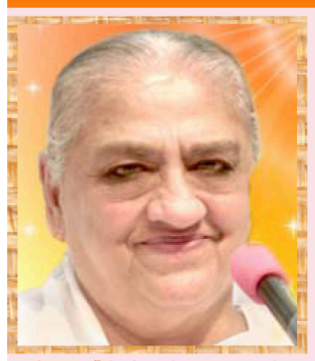
दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

साकार बाबा को यह एवार्ड मिला पक्का था कि आज ब्रह्मा हूँ, कल जाकर कृष्ण बनूंगा। जैसे ड्रेस सामने रखी हो उसे पहनना हो। तो आज हम ब्राह्मण हैं हमारे लिए देवता रूप की ड्रेस तैयार है। हमने यहां जो कर्म किया है तो हमारा फल तो तैयार है ही ना, इसमें डर काहे का है। अगर शरीर छूटना ही है तो इसमें घबराने की क्या बात है। जाकर नया लेंगे। इसीलिए हमको मृत्यु से भी भय नहीं है। मनुष्यों को मृत्यु का डर इसीलिए होता है कि उन्हों को पता ही नहीं है कि मृत्यु होती क्या है? वो सोचते हैं कि पता नहीं कौनसा पशु बनेंगे। हमें तो पता है कि हमको तो देवता ही बनना है। इसीलिए हम निश्चिंत हैं। अगर स्थिति अच्छी नहीं होगी तो फिक्र होगा। फिर उस चिंता में शरीर छोड़ेंगे तो भविष्य क्या बनेगा! बाबा हम लोगों को टाइटिल देता है बेफिक्र बादशाह। क्या फिक्र है! बाबा सेवा करा रहा है, खिला रहा है, शरीर को भी चला रहा है, आत्मा को भी भोजन देकर आगे बढ़ा रहा है, सेवा भी करा रहा है। हमारा कर्म अच्छा है, तो भविष्य अच्छा होना ही है। इसीलिए हम बिल्कुल बेफिक्र हैं। तो ये तैयारी हमको विनाश के पहले करनी है। हम शरीर के भान से न्यारे रहने का अभ्यास करते हैं। चोला टाइट नहीं होना चाहिए, जो टाइट वस्त्र पहनता है वह समय पर उतार नहीं सकता। उसको उतारने के लिए टाइम चाहिए। जो लूज पहनता है तो सेकण्ड में बदल सकता है। अगर हिसाब-किताब का धागा टाइट बंधा है तो उस समय हम अशरीरी नहीं बन सकते। स्वतंत्र होंगे तो कोई भी बंधन खींचेगा नहीं। यदि रस्सी बंधी हुई होगी तो हम ऊपर जाना चाहेंगे लेकिन वह नीचे ले आयेगी। इसलिए पहले सूक्ष्म धागे तोड़ने हैं, मोटे-मोटे धागे नहीं। जैसे मोह नहीं है, लेकिन टाइम पर मोह अंधा बना देता है। तो ऐसे नहीं समझो कि मेरे सारे विकार खत्म हो गए हैं लेकिन अंदर देखो कि अंशमात्र भी कहां रह तो नहीं गये हैं? यदि इच्छा नहीं है, अच्छा लगता है तो अच्छी चीज भी खींचेगी। अंशरूप में भी है तो उसे खत्म करना है।

एक है नॉलेज की रीति से दिमाग से पहचानने वाले, दूसरे हैं दिल से पहचानने वाले। तो दिमाग की रीति से हमने अगर बाबा को पहचाना है कि हाँ, ठीक है, निराकार है, ज्योतिबिन्दु है, परमधाम में रहता है, ज्ञान का सागर है, प्यार का सागर है, ये शक्तियां है - यह हमने सिर्फ नॉलेज की रीति से दिमाग से जान लिया कि बाबा ये है और दूसरा है जो मेरी दिल कहे कि हाँ, मेरा बाबा है। सिर्फ नॉलेज के आधार से प्यार नहीं पैदा होता। प्राप्ति के आधार से प्यार होता है। तो प्राप्ति को पहले सामने लाओ, सिर्फ बाबा-बाबा नहीं करो। प्राप्ति ऐसी चीज है जो किसी अंजान से भी संबंध जुट जाता है। कहीं रास्ते में आपको ठोकर लग गई, वहां आपका कोई भी नहीं है, लेकिन किसी अन्जान ने आपको सहारा दिया तो आपके दिल का प्यार उससे हो जायेगा। क्योंकि प्राप्ति हुई। फौरन ही कहेंगे कि आपको हम जीवन भर नहीं भूलेंगे। कोई सम्बन्ध ही नहीं है और जीवन भर नहीं भूलेंगे! क्योंकि प्राप्त हुई। तो बाप और बच्चे के सम्बन्ध को प्राप्ति के आधार से याद करो। बाबा ने मुझे क्या दिया! बाबा से क्या आनन्द की अनुभूति हुई, क्या शांति की अनुभूति हुई, क्या नि:स्वार्थ प्यार की अनुभूति हुई - उस प्राप्ति में डूब जाओ, उस अनुभव में खो जाओ, फिर आपको दिल से बाबा के प्यार का ऐसा अनुभव होगा जैसे कम्बाइन्ड चीज है। जिसको कोई अलग कर नहीं सकता है। यह है दिल से बाबा को याद करना। बाकी नॉलेज के आधार से, दिमाग से याद किया तो नजदीक अनुभव नहीं कर सकेंगे। थोड़े टाइम के लिए शांति मिलेगी, थोड़े टाइम के लिए सोल कान्सेस हो जायेंगे। सदाकाल के लिए नहीं। बाबा कहते हैं अभी तो यह कहो कि याद करना मुश्किल नहीं लेकिन भूलना मुश्किल है। क्योंकि प्राप्ति के आधार पर दिल ने माना मेरा बाबा है। जब दिल में कोई बात आ जाती है तो बहुत मुश्किल निकलती है।